International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

मीमांसा तत्त्व व्यवस्था में शक्ति का निरूपण

डॉ सरोज बाला
सहायक प्रवक्ता, संस्कृति विभाग,
भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय,
क्षेत्रीय केन्द्र, खरल, (जींद)

मीमांसा कार्य :–

कारण के संबंध की व्याख्या में एक नीवन दृष्टि का परिचय देती है। कार्य की उत्पत्ति के लिए कारण के अतिरिक्त 'शक्ति' भी माननी चाहिए। बीजों से अंकुर पैदा किए जा सकते हैं यह बात सत्य है, परन्तु किसी भी कारण से जैसे बीज को भून देना या बीज को किटनाशकों से बचा कर न रखनां ऐसे कई कारण है जिसके द्वारा उनकी दोबारा से अंकुर उत्पन्न करने की शक्ति नष्ट हो जाती है। तब मनुष्य लाख परिश्रम करके भी उनसे अंकुर उत्पन्न नहीं कर सकता है। जब तक यह शक्ति बीज के अन्दर बनी रहती है तभी तक उनसे अंकुर उत्पन्न किया जा सकता है। इसलिए मीमांसा बीज से अतिरिक्त 'शक्ति' को भी कारण की सहायता देने वाला पदार्थ मानना ही चाहिए। इस प्रकार मीमांसा की दृष्टि में शक्ति एक विशिष्ट पदार्थ है।[1]

लक्षण :–

सभी भावों से कार्यानुमेया शक्ति है जिसको अर्थापति के द्वारा भाट् स्वीकार करते हैं। वही प्रभाकर ने इसे अनुमानगम्य स्वीकार करते है। महर्षि जैमिनि ने 'तदशक्ति श्चानुरूपत्वात्' सूत्र में शक्ति शब्द सामर्थ्य रूप अर्थ में प्रयुक्त किया है।[2]

स्वभाव :–

सभी पदार्थों की उत्पति के मूल में एक अदृष्ट शक्ति है।[3] यह कारण रूप में है। जितने भी कार्य रूप सांसारिक पदार्थ है, उनके मूल में यह कारण रूप अदृष्ट शक्ति विद्यमान रहती है। इस शक्ति के नष्ट होते ही कार्य की उत्पत्ति भी मानों रूक जाती है।

शक्ति के भेद :–

इस शक्ति के सहजा, आधेया तथा पदशक्ति तीन भेद हैं।[4]

सहजा शक्ति :–

वद्धि आदि कारणों में ज्वलनादि कार्यों की उत्पादक शक्ति सहजा शक्ति कही जाती है। इसी प्रकार वैदिक स्थल में व्रीहि तथा यव में भी यागरूप कार्य की उत्पादका भी सहजा शक्ति है।[5]

आधेय शक्ति :–

प्रतिबन्धक चन्द्रकान्तमणि के संयोग से अग्नि में रहने वाली ज्वलनरूप कार्य की उत्पादिका स्वाभाविक शक्ति नष्ट हो जाने पर उत्तेजक सूर्यकान्तमणि के सन्निधान से अग्नि में फिर से ज्वलनरूप कार्य की उत्पादिका जो शक्ति उत्पन्न होती है, उसे आधेया शक्ति करते है।[6]

पदशक्ति :–

घट पद में उनके शक्त अर्थ की बोधक वृत्ति पदशक्ति कही जाती है। पदशक्ति का अस्तित्व सिद्ध करने के लिए निम्नलिखित अनुमान उपस्थित किए हैं –

1. पद में उसके अर्थ को उत्पन्न करने वाली (पद) शक्ति विद्यमान है– (प्रतिज्ञा)
2. उसमें (पद में) उसके शाब्द बोध का जनक पदत्व रहने से (हेतु)
3. अन्य पद के समान (दृष्टान्त)

नैयायिक का कहना है कि पद तथा अर्थ के संबंध रूप में जो पदशक्ति स्वीकृत की गई है, वह द्रव्य, गुण आदि सप्त पदार्थों से पृथक पदार्थ नहीं हैं। उपर्युक्त मत का निराकरण करते हुए भाट्टचिन्तामणिकार कहते हैं कि पद में विद्यमान पदशक्ति को ईश्वरेच्छा रूप नहीं माना जा सकता। इसका कारण यह है कि पद (शब्द) को न्याय ने आकाश का गुण माना है। इससे ईश्वर इच्छा भी (आत्मा) का गुण मानी गई है। पद (शब्द) में विद्यमान पदशक्ति को यदि न्याय ईश्वर इच्छा रूप मानते हैं तो ऐसा मानने से गुण में गुण न मानने का उनका जो सिद्धान्त है, उसके साथ इस मान्यता का विरोध हो जाता है। अतः पदशक्ति का ईश्वरेच्छा रूप मानना स्वयं न्याय को भी अनुरूप नहीं है।

'शक्ति' के मानने का मौलिक उपयोग मीमांसा मत है। मीमांसा वैदिक काण्ड के अनुष्ठान का पक्षपाती है, परन्तु कर्म तथा कर्मफल में बहुत ही अधिक व्यवधान होता है। आज तो यज्ञ का अनुष्ठान किया जाता है और उसका स्वर्ग रूपी फल बहुत वर्षों के अनन्तर होता है। इस व्यवधान की व्याख्या करने के लिए मीमांसा 'अपूर्व' नामक पदार्थ मानती है। अपूर्व का अर्थ है कर्मों के शुभ या अशुभ फल– पुण्य तथा पाप। कर्म के अनुष्ठान से यही अदृष्ट उत्पन्न हो जाता है और यही 'अपूर्व' कर्म के फलों को कालान्तर में उत्पन्न होने वाले फल– इन दोनों के बीच में 'अपूर्व' वर्तमान रहता है, जो एक ओर कर्म से उत्पन्न होता है और दूसरी ओर कर्मफल का निष्पादन होता है। यह 'अपूर्व' भी 'शक्ति' जैसे स्वतंत्र द्रव्य का ही कर्मकाण्ड के क्षेत्र में एक श्लाघनीय प्रतीक है। फलतः 'शक्ति' की कल्पना मीमांसा का एक मौलिक तत्व है।

सन्दर्भ–सूची :–

1. भारतीय दर्शन, पृ0 327
2. जैमिनी सूत्र, 19, 2
3. ThePrabhakara School of Purva Mimansa
4. भाट्टचिन्तामणि, पृ0 33
5. भाट्टचिन्तामणि के तर्कपाद का अध्ययन, पृ0 175

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

6. भाट्टचिन्तामणि तर्कपाद विमर्श, पृ0 234